चार्वाक दर्शन का ज्ञान सिद्धांत

ज्ञान प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति का साधन क्या है? सभी भारतीय दर्शन इस प्रश्न पर विचार करते हैं। सभी दर्शन इस प्रकार के प्रश्न पर अलग-अलग उत्तर देते हैं।

चार्वाक दर्शन ज्ञान प्राप्ति के लिए एकमात्र प्रत्यक्ष को मानता है। बाकि अन्य सभी ज्ञान प्राप्ति के साधनों को वह नकार देता है। बाकि ज्ञान प्राप्ति के साधन जैसे अनुमान, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि आदि प्रमाणों का चार्वाक दर्शन खंडन करता है।

चार्वाक दर्शन कहता है "प्रत्यक्षमेकं प्रमाणम्" चार्वाक दर्शन मानता है कि प्रत्यक्ष का एकमात्र स्रोत ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। ज्ञानेन्द्रिया पांच होती हैं। इन्हीं ज्ञानेन्द्रियों से प्रत्यक्ष के उनके विषय का ग्रहण होता है।

चार्वाक दर्शन यह भी मानता है कि ज्ञानेंद्रिया पांच हैं- चक्षु, त्वक, घ्राण, ~~नासिका~~ कर्णेन्द्रिय एवं जिह्वा। इनसे क्रमशः रूप, स्पर्श, गंध, श्रवण एवं स्वाद (रस) का ज्ञान होता है।

(Dr. Ram Narain Mishra)

Scanned By KaagazScanner